**International Journal of Research in Social Sciences**
Vol. 8, Issue 12, December - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

# वैश्वीकरण और हिंदी उपन्यास

: डॉ. स वता टाक
सहायक आचार्य हिंदी
मा ला व महा वद्यालय, भीलवाड़ा

**21**वीं सदी में भारतीय समाज एवं संस्कृति साहित्य की दुनिया में पूरे बदलाव के साथ अवतरित हो रहा है **;** जिसमें **1991** में उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण से पनपे बाजारवाद और उपभोक्तावाद इसके प्रमुख बिंदु हैं; जिसने पूरी दुनिया को अपने बाजार के रूप में परिवर्तित कर दिया**।**

यह सर्व वदित भी है क उपन्यास वधा अपने उद्भव से लेकर आज तक वकास मान वधा रही है, इसने न सर्फ अपने समय के साथ तादात्म्य स्था पत कया है ; बल्कि एका धक बार भ वष्य का सटीक आकलन कर वद्वानों का अचं भत कर दिया है **।** आज वैश्विक आ र्थक वचारधारा का प्रभाव साहित्य पर हु - - ब - हू पड़ता दिखाई दे रहा है**।** आज बाजारवादी व्यवस्था से हर कोई त्रस्त है**।** सारी ख्वाहिशों को पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंग डालने की इच्छा प्रबल होती जा रही है **।** भाव, संवेदना, प्रेम का स्तर अब आम लोगों के जीवन से अलग होता जा रहा है**।** उसके स्थान पर अब केवल और केवल पूँजी, पैसा, स्वार्थ ही प्रमुख हो गया है **।** मोबाइल इंटरनेट ही अब मनुष्य की दुनिया बन चुकी है ; जिसमें सा रे रिश्ते, ना ते, संवेदना, संस्कार सब के सब नष्ट हो ते जा र हे हैं**।** जिसे समकालीन हिंदी उपन्यास कारों ने अपनी लेखनी से मुखरता प्रदान की है**।** इन उपन्यासकारों में अलका सरावगी कृत 'एक ब्रेक के बाद ', ममता का लया कृत 'दौड़', प्रभा खेतान कृत 'पीली आंधी', र वंद्र कृत 'दस बरस का भंवर' का नाम उल्लेखनीय है**।** इन उपन्यासकारों ने वैश्वीकरण का प्रभाव समकालीन भारतीय समाज और हिंदी साहित्य पर जिस रूप में पड़ा है; उसे सशक्त रूप से प्रस्तुत कया है**।**

भारत देश में **20**वीं सदी के अंतिम दशक में उत्तर आधुनिकतावाद जैसी अवधारणा के माध्यम से वैश्वीकरण और बाजारवाद की संकल्पना अत्य धक तेजी से उभर कर सामने आती है। इस बाजारवाद का प्रभाव समाज , अर्थनीति और राजनीति पर पड़ने के साथ ही साथ साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। बाजारवाद ने पूरे समाज को 'जीन्स' में परिवर्तित दिया है। इस भूमंडलीकृत व्यवस्था में हर वस्तु बिकने के लए तैयार है और हर व्यक्ति खरीदार के रूप में सामने आता है। भूमंडलीकरण या बाजारवाद के प्रभा वत उपन्यासों में (रेहन पर रग्घू) , दौड़ (ममता का लया), मुन्नी मोबाइल (प्रदीप सौरभ), मुझे चाँद चाहिए (सुरेन्द्र वर्मा), काशी का अस्सी (काशीनाथ संह), सही नाप के जूते (लता शर्मा), वजन (मैत्रीय पुष्पा) आदि ।

भूमंडलीकरण का बहुत ही पीड़ादायी उदाहरण हमें काशीनाथ संह के उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। बुढापा का दंश झेलते हुए कथानायक रघुनाथ का जीवन- वस्तार बनारस से अमेरिका तक फैला

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, December - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हुआ है। इसमें परिवार का बिखड़ना , तलाक, बुढ़ापा, अकेलापन, अंतरजातीय प्रेम संबंध, छोटे बेटे का पैसे के पीछे पागलपन तथा रघुनाथ मास्टर का बेहद तनावग्रस्त जीवन , ये तमाम बातें यानि बाजारवाद ने जीवन के सोच एवं मूल्य को ही बदल कर रख दिया है। रघुनाथ दो लड़ाई लड़ते हुए नजर आते हैं। एक लड़ाई पत्नी , बेटा, बेटी और दूसरी समाज और प्रशासन की व्यवस्था के वरुद्ध । इस उपन्यास में भूमंडलीकरण के चलते जिस अपसंस्कृति का जन्म हुआ है, उसे हम देख सकते हैं।

गरिराज कशोर का उपन्यास 'स्वर्णमृग' में भूमंडलीकरण के चलते साइबर क्राइम की दुनिया पर हिन्दी साहित्य और समाज कस कदर दिशाहीन होता जा रहा है, उसका चत्रण है उसे हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

"प्रभा खेतान" बाजार के बीच : बाजार के खलाफ ' में स्त्री के जीवन पर भूमंडलीकरण के प्रभाव बहुमुखी , ले कन वरोधाभासी हैं। राष्ट्र बनाम भूमंडलीकरण या फर बाजार बनाम समाज जैसी सरलीकरण पर सवार होकर स्त्री की आजादी के पैरोकार इन प्रभावों का आकलन नहीं कर सकते।

'दौड़' उपन्यास में ममता का लया भूमंडलीकरण के युग में हमारे आधुनिक पीढ़ी की दिशा को रेखां कत करती है। पैसा कमाने का आसान रास्ता वदेश के नौजवानों को ह ठाक र्षत करने के समान भारत की आधुनिक पीढ़ी को भी खींच लया। भारतवर्ष की आधुनिक पीढ़ी भी आँख मूँदकर तन-मन-धन को भूलकर इस दौड़ में शा मल है। भूमंडलीकरण और औद्यो गीकरण ने हमारे देश के युवकों को कृ ष तथा परंपरागत नौकरी से हटाकर एक नया सपना देखने को प्रेरित कर दिया है।

'मुन्नी मोबाइल' समकालीन हिन्दी साहित्य के चेह रे को दिखाने वाला आईना है। इसमें यह दिखाया गया है क धर्म, राजनीति और बाजारवाद तथा मी डया के द्वारा कस ओर हमारा समाज प्रेरित व प्रभा वत हो रहा है। कथा की नायिका बिन्दु यादव का मुन्नी मोबाइल बनना , दिल्ली के बाहरी इलाकों की एक सीधी-सादी घरेलू नौकरानी बिन्दु यादव (मुन्नी) को भूमंडलीकृत संस्कृति ने एक दबंग और अति ही महत्वाकांक्षी साबित कया है। मुन्नी एक साधारण अनपढ़ महिला होते हुए भी अपने कामकाज, हिम्मत व कुशाग्रता के बल पर दिन-प्रतिदिन नई-नई ऊँचाइयाँ चढ़ती है और उन ऊँचाइयों के पीछे कसी न कसी रूप में बाजारवाद का रूप वद्यमान है। मोबाइल मुन्नी के जीवन में क्रांति लाता है। मोबाइल के जरिए वह और घरों में काम करने वाली महिला धीरे-धीरे दूसरी बेरोजगार औरतों को काम दिलाने वाली महिला बन जाती है। अंततः अतिरिक्त पैसे की हवस उसे सेक्स रैकेट संचा लका का घृ णत कार्य करने के लए ववश करती है। मुन्नी का यही क्रया-कलाप व कमाई की भूख उसे अपने दोनों बेटों एवं पति से वमुक्त तो करता ही है , साथ ही साथ उसकी मृत्यु का कारण भी बनता है। बाद में मुन्नी की मृत्यु के बाद उसकी बेटी रेखा सेक्स रैकेट का संचालन करती है और चतकबरी बन जाती है। भूमंडलीकरण ने न जाने कतनी निम्नवर्गीय औरतों के जीवन में कोहराम मचाया है और मचा रहा है।

'देश भीतर देश' प्रदीप सौरभ का एक ऐसा उपन्यास है; जिसमें देश के पूर्वोत्तर राज्य की उपस्थिति, वकास की वकलांगता और प्रकृति की मार झेल रहे पूर्वोत्तर की बदहाली के लए राजनीति, मी डया और बाजार का कुटिल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, December - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आपसी गठबंधन है। देश की आवाज कहलाने वाली मी डया में पूर्वोत्तर के प्रति घोर उपेक्षा व उदासीनता है। बाजारवाद के युग में बाजार की ताल पर नाच रही मी डया के पास नंगा फोटो और पेज थ्री पार्टियों की तस्वीरें छापने के लए स्पेश है , ले कन पूर्वोत्तर राज्यों की समस्याओं के लए बिल्कुल स्पेश नहीं है। इस स्थिति में इंटरनेट जैसा वैश्विक सूचना मंच ठोस व ईमानदार वकल्प बनकर सामने आता है। 'देश भीतर देश' का सवाल वनय फेसबुक पर ही शेयर करता है। असम के बेरोजगार युवा उल्फा में शा मल होते हैं। कारण परिवार पालने के लए उल्फा मा सक वेतन देता है। अस मया लड़ क याँ अंडर ग्राउण्ड उल्फाइयों पर जान छिड़कती हैं। सन् 1970 से लेकर **2010** तक असम राज्य में वकास के नाम पर घुसपैठ, हत्या, बलात्कार, प्रांतवाद और राज्य के अंदर बढ़ रहे अलगाववाद का सफल चत्रण इस उपन्यास में है। य हाँ पर एक जवान लड़के की अधेड़ गर्लफ्रेंड और साइबर प्रेम-सामाजिक यथार्थ की नग्नता आदि को देख सकते हैं।

'तलघर' उपन्यास में उपन्यासकार ज्ञानप्रकाश ववेक ने भूमंडलीकरण के दौर में दफ्तरी , शोषण और साजिश के शकार युवकों और युवतियों की कथा का दस्तावेज प्रस्तुत कया है। महानगरों में आम युवाओं की कोई पहचान नहीं होती है। कारण चेतन की कोई पहचान दिल्ली में नहीं है; क्यों क दिल्ली आमंत्रित करता है और आने वाले की सबसे पहले पहचान गुम करता है।

निष्कर्ष के रूप में तमाम उपन्यासों के ववेचन के आधार पर यह क हा सकटा है क आज के समय में प्रत्येक देश महासत्ता (**Super Power)** बनना चाहता है और प्रत्येक देश का नागरिक भी एक सुप र मैन बनकर जीना चाहता है। भूमंडलीकरण , वैश्वीकरण, औद्योगीकरण की नयी सभ्यता , सूचना के महा वस्फोटक तंत्र के बावजूद आज मनुष्य की बुनियादी जरूरतें और उसका भावनात्मक लगाव भी बदल हा है। भूमंडलीकरण और बाजारवाद की अपसंस्कृति ने आज समाज को त्रासदी में बदल दिया है। लोग आज अ धक सुख की चाह में स्वयं दुःखी एवं अन्य को भी दु खत करते नजर आ रहे हैं। बाजारवाद नारी, पुरुष, बच्चे सभी का दोहन कर रहा है। यह बाजारवाद मुनाफे की पूँजी की एक बनी बनाई योजना है; जो बहुत ही घातक है। यह वचारधाराओं एवं समाज को रसातल में ले जाने का पश्चिमीकरण है।

सन्दर्भ-पुस्तकें

1 . भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास : पुष्पपाल संह
2 . 'दौड़' उपन्यास : ममता का लया
3 . समय और संस्कृति : श्यामाचरण दुबे
4 . उपन्यास की समकालीनता : ज्योति जोशी